संचार ब्रीफ्स

विज्ञान और समाचार: स्वास्थ्य व अनुसंधान संचार

ब्रीफ #4: प्रसवपूर्व देख-भाल

प्रसवपूर्व अवधि यानी गर्भधारण और प्रसव के बीच के महीने की अवधि जच्चा और बच्चे के स्वास्थ्य और आरोग्य संबंधी सहयोग व हस्तक्षेप के लिए काफी महत्वपूर्ण है। कुशल स्वास्थ्य सेवा प्रदाता की ओर से प्रसवपूर्व देखभाल उपलब्ध होने से बहुत से लक्ष्य पूरे होते हैं। इनमें स्वास्थ्य संबंधी खतरों की पहचान, रोगों से बचाव और समाधान तथा मां बनने जा रही महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जरूरी जानकारी उपलब्ध करवाना शामिल हैं। प्रसवपूर्व देख-भाल के कुछ उदाहरण हैं- मां को स्वस्थ आहार और आवश्यक पोषक तत्वों के बारे में परामर्श; मां में बीमारियों का परीक्षण और भ्रूण में किसी विसंगति की पहचान; प्रसव और प्रसव के दर्द के दौरान किसी समस्या की आशंका को ले कर तैयारी और गर्भावस्था के कष्टप्रद लक्षणों का प्रबंधन। ऐसी स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाने से मातृत्व और नवजात शिशु की मृत्यु और बीमारियों की दर कम हो जाती है। यह संवहनीय विकास लक्ष्य (एसडीजी) 3.1 और 3.2 से संबंधित है, जो क्रमशः जच्चा और बच्चे की मृत्यु से संबंधित हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने काफी समय पूर्व से ही यह सिफारिश की हुई है कि गर्भवती महिलाओं को नियमित प्रसवपूर्व देख-भाल मिलनी चाहिए। 2002 में इसकी शुरुआत करते हुए डब्लूएचओ ने सिफारिश की थी कि गर्भावस्था के दौरान महिला को कम से कम चार बार प्रसवपूर्व देख-भाल अवश्य मिले। इस मॉडल को फोक्स्ड या प्रारंभिक प्रसवपूर्व देख-भाल कहा जाता है और यह विश्व भर में मातृत्व और बाल स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए न्यूनतम मानदंड के तौर पर काम करता है। 2015-16 से इसे एनएफएचएस- 4 में एक पैमाने के तौर पर शामिल किया गया है। डब्लूएचओ ने 2016 में अपनी सिफारिश को संशोधित किया। अब यह कहता है कि गर्भावस्था के दौरान कम से कम आठ बार प्रसवपूर्व देख-भाल उपलब्ध होनी चाहिए। हालांकि इस ब्रीफ में एनएफएचएस-4 के आंकड़ों का सार तैयार किया गया है, इसलिए यह चार बार की देख-भाल के पैमाने पर ही केंद्रित है।

भारत में, प्रसवपूर्व देख-भाल में जच्चा बच्चा सुरक्षा (एमसीपी) कार्ड उपलब्ध करवाना भी शामिल है। यह पहल महिला और बाल कल्याण मंत्रालय और स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय की साझेदारी में शुरू की गई है। यह कार्ड स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता, महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने और गर्भवती मां व उसके बच्चे के स्वास्थ्य संबंधी रिकार्ड रखने का एक साधन भी है। इसका प्रसवपूर्व, प्रसव के दौरान, प्रसव उपरांत और बच्चे के तीन साल तक के प्रारंभिक बाल्यकाल के दौरान उपयोग किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान परिवार को यह कार्ड स्वास्थ्य कार्यकर्ता से मिलता है और साथ ही उन्हें यह निर्देश दिया जाता है कि वे हर बार स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल जाते समय इसे जरूर साथ ले जाएं। इसमें महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी ब्योरे लिखने की जगह होती है। इसमें वे सूचनाएं भी होती हैं जो स्वास्थ्य कार्यकर्ता परिवार को उपलब्ध करवाता है और जिन निर्देशों का पालन करने को परिवार को वह कहता है। एमसीपी कार्ड प्राप्त करना एनएफएचएस- 4 में आकलन का एक पैमाना था।

एनएफएचएस- 4 (2015-16) के कुछ प्रमुख तथ्य:

15– 49 साल की उम्र की महिलाएं, जिन्होंने सर्वे से 5 साल पहले तक की अवधि में जीवित बच्चे को जन्म दिया हैः

1. 51% ने अपनी पिछली गर्भावस्था के दौरान कम से कम चार बार प्रसवपूर्व स्वास्थ्य सेवाएं हासिल कीं, जो 2005-06 के 37% से अधिक है।
2. 17% को अपनी पिछली गर्भावस्था के दौरान एक बार भी प्रसवपूर्व सेवा उपलब्ध नहीं हुई।

15-49 वर्ष की उम्र की महिलाओं में जिन्होंने सर्वे से 5 साल पहले की अवधि के दौरान जीवित बच्चे को जन्म दिया है और अपनी गर्भावस्था को रजिस्टर करवाया थाः

3. 89% को उस प्रसव के लिए एमसीपी कार्ड हासिल हुआ।

एनएफएचएस-4 सर्वे के दौरान, 15 से 49 वर्ष की उम्र की महिलाओं को सर्वे के 5 साल पहले तक की अवधि के दौरान की उनकी नवीनतम गर्भावस्था के बारे में पूछा गया। इस दौरान गर्भवती रही महिलाओं में लगभग (51%) को कम से कम चार प्रसवपूर्व देखभाल उपलब्ध हुई थी। जबकि हर छह में से एक (17%) ऐसी थी, जिसे एक बार भी प्रसवपूर्व देख-भाल के लिए स्वास्थ्य सुविधा तक जाने का अवसर नहीं मिला था। चार बार प्रसवपूर्व देख-भाल हासिल करने वाली महिलाओं का अनुपात उनके रहने की जगह पर भी निर्भर रहा। शहरी इलाकों में रहने वाली महिलाओं को न्यूनतम चार प्रसवपूर्व देख-भाल हासिल होने की उम्मीद ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाओं के मुकाबले ज्यादा रहती है। शहरी इलाकों में यह 66% है जबकि ग्रामीण में 45% रहती है। इस न्यूनतम स्तर को सिल करने वाली महिलाओं का अनुपात बिहार में न्यूनतम (14%) रहा, जबकि अंडमाण निकोबार में अधिकतम (92%) रहा।

प्रसवपूर्व देखभाल के ट्रेंड

महिलाओं का प्रतिशत उम्र 15-49[1]

	जिन्हें पिछली गर्भावस्था में 4+ बार प्रसवपूर्व देखभाल मिली
एनएफएचएस- 3 (2005-06)	37
एनएफएचएस- 4 (2015-16)	51

[1]जिन्होंने सर्वे से 5 साल पहले तक जीवित बच्चे को जन्म दिया है

गर्भवती रही और अपनी गर्भावस्था को रजिस्टर करवाने वाली महिलाओं (गर्भवती महिलाओं का 85%) में अधिकांश (89%) को उस प्रसव के लिए एमसीपी कार्ड हासिल हुआ। इसमें पृष्ठभूमि से बहुत फर्क नहीं रहा। सामान्य तौर पर युवा माताओं को एमसीपी कार्ड हासिल होने की उम्मीद अधिक उम्र की माताओं के मुकाबले ज्यादा रही। (20 वर्ष से कम उम्र की: 92%; 20-34 वर्ष: 89%; 35-49 वर्ष: 84%). जो अपना पहला बच्चा कर रही होती हैं, उन्हें एमसीपी कार्ड हासिल होने की उम्मीद ज्यादा रहती है, दूसरे या उसके बाद की संख्या वाले बच्चे के मुकाबले। (बच्चा1: 91%; बच्चा 2-3: 90%; बच्चा 4+: 83%)।

शहर बनाम गांव के पैमाने पर प्रमुख प्रसवपूर्व बिंदु

आवास	जिन्हें पिछली गर्भावस्था में 4+ बार प्रसवपूर्व देखभाल मिली	जिन्हें अपने पिछले प्रसव के लिए एमसीपी कार्ड हासिल हुआ, अगर गर्भावस्था रजिस्टर्ड थी
शहरी	66	88
ग्रामीण	45	90
कुल	51	89

रेफरेन्स:

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पोपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) और आईसीएफ. 2017. नेशनल फैमली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस-4), 2015-16: भारत। मुंबई: आईआईपीएस

प्रोजेक्ट 'संचार' का लक्ष्य लोक स्वास्थ्य के क्षेत्र में संचार के लिए साक्ष्य का उपयोग करने की क्षमता तैयार करना और इसे संबंधित लोगों की आदत में शामिल करवाना है। इसके लिए 'संचार' वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित स्रोतों से प्राप्त राष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों को आंकता है और उन्हें आसानी से समझ आने लायक स्वरूप में उपलब्ध करवाता है। साथ ही डाउनलोड कर आसानी से उपयोग की जा सकने वाली सहयोगी दृष्य सामग्री भी उपलब्ध करवाता है।

इससे आपके काम में क्या मदद मिल सकती है?

प्रसवपूर्व देखभाल जच्चा और बच्चा की मृत्यु व रुग्णता दर को कम करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मातृत्व मृत्यु दर और नवजात शिशु मृत्यु दर को कम करना एसडीजी में शामिल है। पत्रकार प्रसवपूर्व देख-भाल के महत्व के बारे में बता सकते हैं। प्रसवपूर्व देख-भाल के संबंध में महिला और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के अनुभवों को सामने ला सकते हैं। साथ ही प्रसवपूर्व देख-भाल संबंधी एसडीजी लक्ष्य की न्यूनत्म आवश्यकता और इस मामले में भारत की प्रगति पर गौर कर सकते हैं।

पत्रकार एमसीपी कार्ड कार्यक्रम पर भी रिपोर्टिंग कर सकते हैं। जहां एनएफएचएस-4 संकेत देता है कि माताओं को यह कार्ड उपलब्ध करवाने में काफी हद तक सफलता मिल रही है, लेकिन इसमें इस बात का आकलन नहीं किया गया है कि इन कार्ड का उपयोग कितना और कैसे किया जाता है। इसकी पड़ताल की जा सकती है।

HARVARD T.H. CHAN SCHOOL OF PUBLIC HEALTH
India Research Center